मनोज
चित्र कथा
मूल्य 4.00
तिरंगा
नहीं झुकेगा
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज
कॉमिक्स

तिरंगा नहीं झुकेगा

लेखक :- बिमल चटर्जी.

चित्रांकन :- त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

आप मनोज कॉमिक्स के पिछले अंकों "अपने देश का गद्दार", "हवा के बेटे" व "बम के गोले" में पढ़ चुके हैं कि राम अपने दोस्त रहीम की बहन की शादी में पाकिस्तान गया और मुसीबत में फंस गया। पाकिस्तान की हुकूमत उसे अपने कब्जे में लेकर उसके पिता कर्नल राघव को ब्लैकमेल करना चाहती थी। रहीम के पिता मेजर आसिफ ने अपने बेटे रहीम के साथ राम को भारत भेजना चाहा, लेकिन वे सफल नहीं हो सके और गिरफ्तार कर लिये गये। हां, उन्होंने अपने पकड़े जाने से पहले राम-रहीम को जरूर भगा दिया था। राम-रहीम ने एक खण्डहर में पनाह ली और यह तय किया कि मेजर आसिफ को वे फौज की कैद से छुड़ाकर भारत निकल आयेंगे, लेकिन इससे पहले कि वे अपनी योजना को अमल में लाते, उन्हें भी पाकिस्तान के नामी जासूस कब्बे खां ने गिरफ्तार कर लिया और मेजर आसिफ के साथ ही उन्हें रेडकैम्प में कैद कर दिया। वहां राम से कर्नल राघव के नाम एक पत्र लिखवाया गया। मजबूरी में राम ने उनके कहे अनुसार पत्र लिख दिया। लेकिन उसने तय कर लिया था कि वह उसी रात मेजर आसिफ और रहीम के साथ कैदखाने से फरार हो जायेगा। वे कैसे फरार होंगे, यह योजना भी उसने मेजर आसिफ और रहीम को बता दी थी। और अब उसे बस रात होने का इन्तजार था। आगे क्या होता है, यह प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़ें :-

कैदखाने के बाहर तैनात पहरेदार एकाएक ही बिजली के गुल होने व कैदियों के चीखने-चिल्लाने से बुरी तरह बौखला उठे।
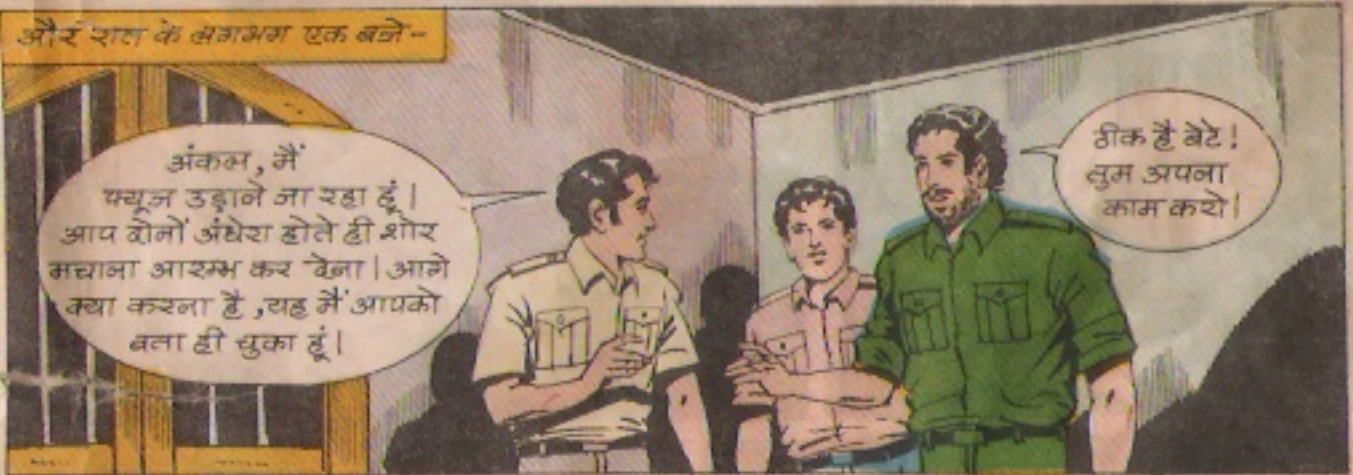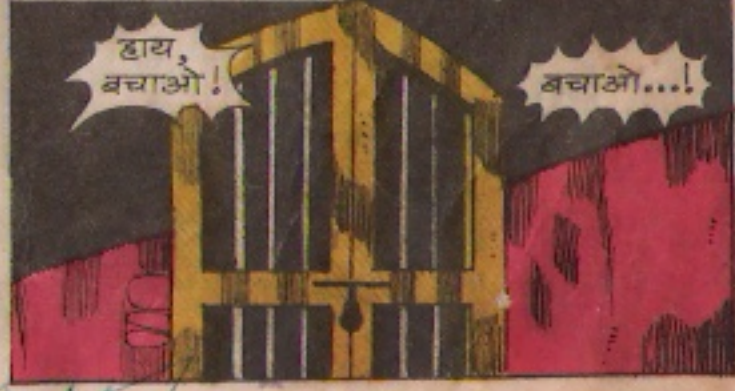
जल्दी से दरवाजा खोलकर देखो, उन कैदियों को क्या हुआ है? उनमें एक कैदी हमारे लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अभी देखता हूं! कम्बख्त बिजली को भी इसी समय जाना था!
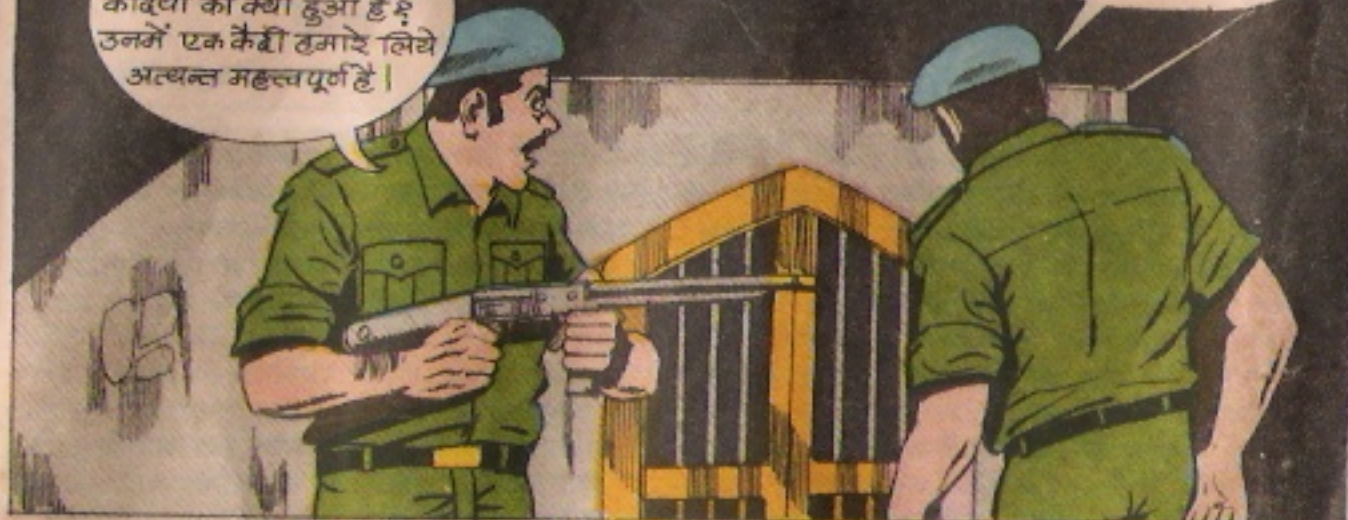
अंकल, आप इसकी गन संभाल लें। हां, गोली तभी चलाइयेगा, जब बहुत ही जरूरी हो।
ठीक है।

मेजर आसिफ ने दूसरे सैनिक की गन संभाल ली और तीनों कैदखाने से बाहर निकल आये।
कुछ पहरेदार आगे भी हैं। हमें कोशिश यही करनी है कि बिना गोली चलाये उन पर काबू पा लें। इस काम में अंधकार हमारी मदद करेगा।

फिर उन्होंने अंधेरे का पूरा फायदा उठाया और मार्ग में मिलने वाले तमाम पहरेदारों को बिना गोली चलाये बेहोश करते हुए आगे बढ़ते आये।
हाय!
आह!
उफ!

शीघ्र ही रहीम के हाथ भी एक गन लग गई और तीनों निर्भीकता से आगे बढ़ते हुए इमारत के मुख्य द्वार पर आ पहुंचे।
लगता है, फ्यूज उड़ गया है।
मेरा भी यही ख्याल है। खैर, मैं देखता हूं उसे। तुम जाकर सर्च लाईट ऑन कराओ।
ठीक है!

अंकल, मौका अच्छा है। एकाएक बिजली गुल होने की वजह से ये सभी बौखलाये हुए हैं। इससे पहले कि ये लोग सर्च-लाइट ऑन करें, हमें किसी जीप आदि को कब्जे में लेकर निकल भागना चाहिये।
मैं भी यही कहने आ रहा था...

...वह देखो, एक जीप यहीं आ रही है...

...यदि किसी प्रकार हम उस जीप पर काबू पा लें तो हमारा काम आसान हो सकता है।
और मुझे विश्वास है कि वह जीप यहीं आ रुकेगी। आप ड्राइविंग सीट संभालने के लिये तैयार रहिये।

कुछ ही क्षणों बाद जीप इमारत के द्वार के सामने आकर रुकी और उसमें से एक सैनिक ऑफिसर उतरकर इमारत की ओर बढ़ा।
राम-रहीम और मेजर आसिफ उसके जीप से उतरते ही अपने स्थान पर दुबक गये थे।

लेकिन जैसे ही वह ऑफिसर इमारत में प्रविष्ट हो कुछ आगे बढ़ा, राम बिजली की-सी फुर्ती के साथ उस पर टूट पड़ा।
कड़ाक्
आह!

तुम्हें इस पर आक्रमण करने की क्या जरूरत थी राम बेटे! यह कार्य हमारे लिये खतरा भी पैदा कर सकता है !
खतरा तो तब पैदा होता, जब मैं इसे बेहोश न करता। कुछ ही आगे पहरेदार बेहोश पड़े हैं। उन्हें देखकर इसे तुरन्त संदेह हो जाता कि कोई गड़बड़ है और तब यह हमारे लिये मुश्किल पैदा कर देता।

ओह! यह बात तो मेरे दिमाग में भी ... थी। वास्तव में तुम अपने पिता की तरह ही बेहद समझ-दार हो।
जी, तारीफ का शुक्रिया। लीजिये, यह कैप अब आप पहन लीजिये...

...मेरे विचार से अब हमें समय नष्ट न करके तुरन्त निकल चलना चाहिये। आइये, जीप पर कब्जा करें।

अगले ही पल तीनों जीप पर सवार हुए और मेजर आसिफ ने पूरी गति से उसे रेड कैम्प के मुख्य द्वार की ओर दौड़ा दिया।

राम बेटे, यह ठीक है कि अंधकार होने की वजह से कोई मुझे नहीं पहचान पायेगा...

...लेकिन द्वार पर खड़े सैनिक अवश्य हमें रोकेंगे और हमें चैक करेंगे। तब?
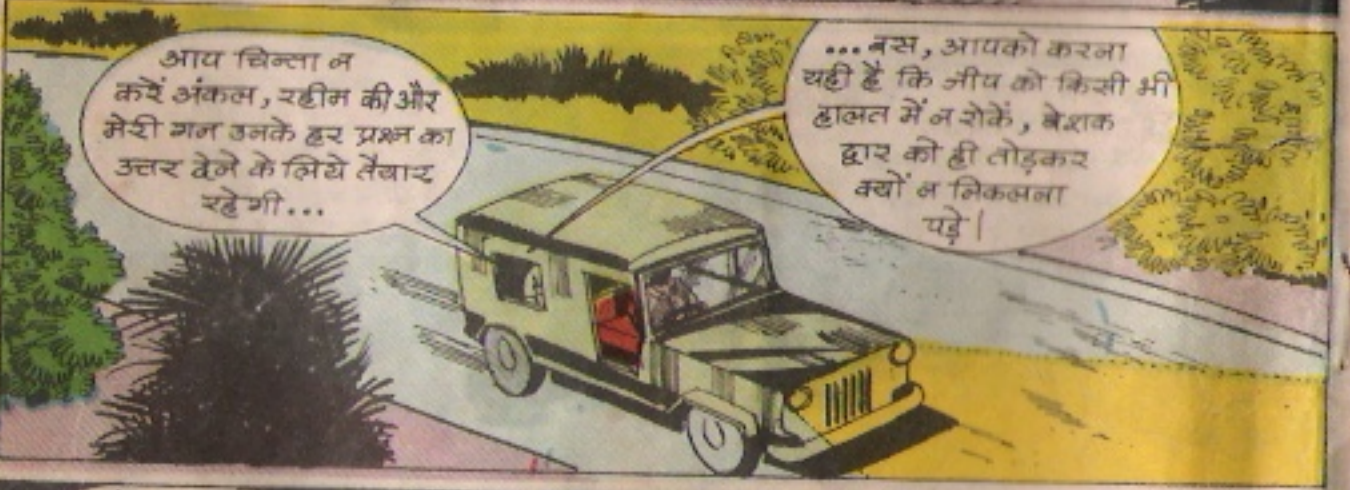
आप चिन्ता न करें अंकल, रहीम की और मेरी गन उनके हर प्रश्न का उत्तर देने के लिये तैयार रहेगी...

...बस, आपको करना यही है कि जीप को किसी भी हालत में न रोकें, बेशक द्वार को ही तोड़कर क्यों न निकलना पड़े।

तभी रहीम की दृष्टि निकट ही पड़े एक बैग पर पड़ी।
राम भइया, यह देखो!
ओह! हथगोले!

बहुत खूब! ये दस्ती बम भी वक्त पड़ने पर हमारे बहुत काम आयेंगे।

ठीक उसी समय चारों तरफ दिन जैसा उजाला फैल गया।
उफ! उन्होंने सर्चलाइट ऑन कर दी है। अब क्या होगा?
यहां से मुख्य द्वार कितनी दूर है अंकल!

कुछ ही दूर। मैं अच्छी तरह देख रहा हूं, द्वार बन्द है और प्रहरी हमारी जीप की ओर ही देख रहे हैं।
चिन्ता नहीं। अब हम दस्ती बम का भी इस्तेमाल कर सकते हैं और गेट को उड़ाने में यह कदम कारगर भी साबित होगा।

और जीप जैसे ही मुख्य द्वार के निकट पहुंची –
गाड़ी रोकिये जनाब!

तभी राम और रहीम जीप से नीचे उतरे और उनके हाथ एक साथ हवा में लहराये...

...और...
धुड़ाम
धड़ाम्
...दो जबरदस्त धमाकों के साथ ही गेट और उसके आसपास खड़े सैनिकों की धज्जियाँ उड़ गईं, लेकिन तब तक राम-रहीम पुनः जीप में बैठ चुके थे।

किन्तु उनकी बद किस्मती से उन शक्तिशाली दस्ती बमों के प्रभाव से कुछ सैनिक फिर भी बच गये थे।
जरूर उस जीप पर कुछ कैदी हैं, जो भाग रहे हैं। तुम लोग उनका पीछा करो। मैं कर्नल साहब को इस घटना की सूचना देता हूं।
यस सर!

तुरन्त ही पीछा आरम्भ हो गया।
ओ माई गॉड! हमारा पीछा किया जा रहा है। शायद कुछ सैनिक उन विस्फोटों की चोट में आने से बच गये होंगे।

आप जीप की गति बढ़ाये रखें अंकल! वक्त पड़ने पर हम उनसे निपट लेंगे।
ठीक है!

उधर गेट इंचार्ज ने अपने ऑफिसर कर्नल अब्दुल्ला को सूचित किया। वे उस समय किसी आवश्यक काम से ऑफिस में ही थे।
सर! मुझे लगता है, उस जीप में कुछ कैदी निकल भागे हैं और बिजली भी उन्होंने ही गुल की होगी।
खामोश! मुझे जरा भी उम्मीद नहीं थी कि तुम लोग इतने लापरवाह निकलोगे...

...क्या मैं तुम्हें पहले ही इस बात की चेतावनी नहीं दे चुका था कि ऐसी घटना कभी भी घट सकती है, अतः तुम्हें हमेशा चौकन्ना रहना है?
यदि उन्होंने हैण्ड ग्रेनेड का इस्तेमाल नहीं किया होता तो वे कभी बचकर नहीं निकल पाते सर! एकाएक हुए हमले से हम लाचार होकर रह गये थे।

अपनी बकवास बन्द करो और मेरे साथ आओ।
यस सर!

शीघ्र ही कर्नल अब्दुला गेट इंचार्ज जफर और कुछ सैनिकों के साथ उस इमारत के भीतर पहुंचा, जहां राम-रहीम और आसिक को रखा गया था। लेकिन वहां का नजारा देखते ही उन सबके पैरों तले से धरती निकल गई।
ओ माई गॉड! सारे पहरेदार बेहोश पड़े हैं! कहीं वे तीनों कैदी तो यहां से नहीं निकल भागे। जल्दी चलो उनकी कोठरी में।

और जब वे उस कोठरी के सामने पहुंचे, जहां राम-रहीम और मेजर आसिक को रखा हुआ था तो उनके दिल धक से रह गये।
या खुदा! तीनों गायब हैं! अब खैर नहीं।

अरे गधो, खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो, जल्दी से आस-पास के इलाकों के चप्पे-चप्पे में उनकी खोज करो, वरना ब्रिगेडियर खान हममें से किसी को भी जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।

शीघ्र ही रेड कैम्प से बहुत-सी जीपें और मोटरसाइकिलें निकलीं और चारों तरफ फैलकर राम-रहीम व मेजर की खोज करने लगीं।
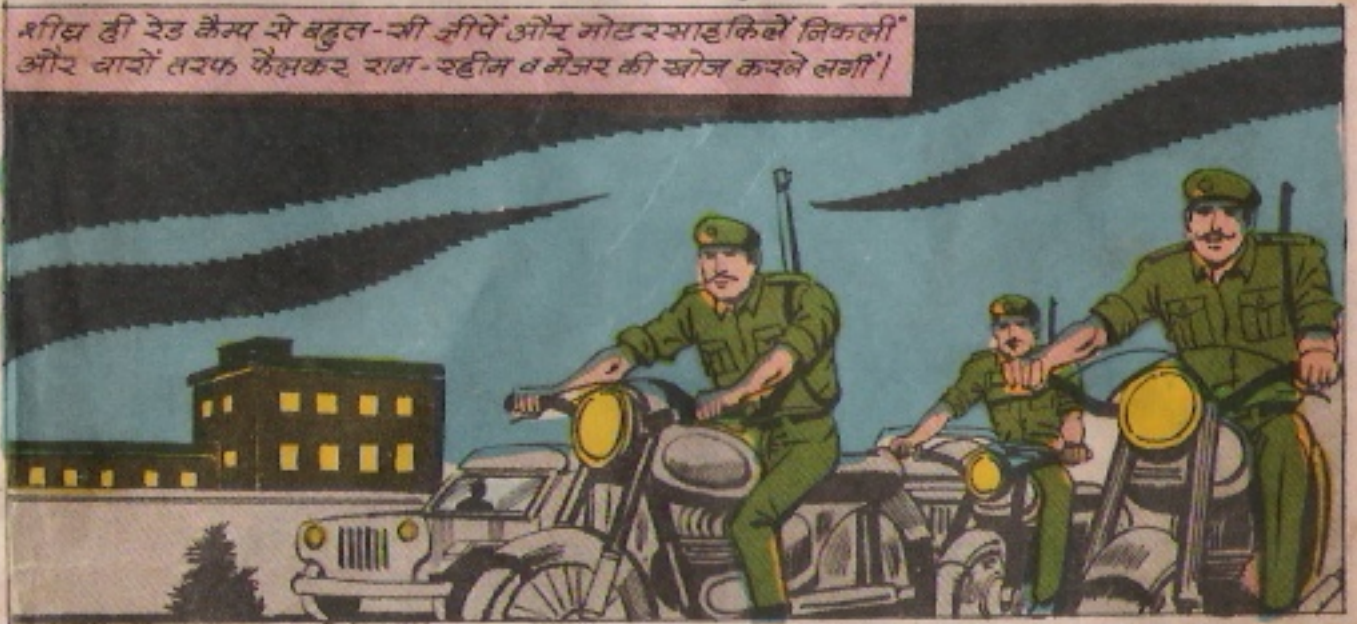
इधर—
मुझे तुरन्त इस बात की खबर ब्रिगेडियर खान को देनी चाहिये, वरना मेरी इस गलती को वे कभी माफ नहीं करेंगे।

सम्पर्क स्थापित होने पर—
सर, मैं कर्नल अब्दुला नईम बोल रहा हूं।
कहो कर्नल, खैरियत तो है?

सर, आपके लिये एक बुरी खबर है। कैम्प से राम-रहीम और मेजर आसिफ निकल भागे।
व्हाटsss! क्या बकते हो?

उत्तर में कर्नल ने सारी घटना बयान कर दी और बोला—
सर, मुझे इस बात का बेहद खेद है, लेकिन आप चिंता न करें, हमारे सैनिक जल्दी ही उन्हें ढूंढ निकालेंगे। मैंने पूरी फोर्स उनके पीछे लगा दी है।
शटअप! एण्ड गो टू हैल!
कहने के साथ ही ब्रिगेडियर खान ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया...

...और फिर जल्दी-जल्दी किसी और का नम्बर मिलाने लगा।
कर्नल को मैं फांसी चढ़वा दूंगा। कम्बख्त ने सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया!

शीघ्र ही दूसरी ओर से सम्पर्क स्थापित हुआ।
हैलो, फन्ने खां हियर!
मैं ब्रिगेडियर खान बोल रहा हूं मि. फन्ने खां!

ओह, जनाब आप? कहिये, इतनी रात गये आपने फोन कैसे किया?
वह हिन्दुस्तानी छोकरा रहीम और उसके बाप के साथ रेड कैम्प से निकल भागा है।

ओ नो! सर, यह कैसे सम्भव हुआ? हमने तो कर्नल अब्दुला नईम को इस सम्बन्ध में सख्त आर्डर दे रखे थे।
लेकिन उन मूर्खों को इतनी समझ कहां है कि ये समझ सकें, राम हमारे लिये कितना महत्त्वपूर्ण मोहरा है। खैर....
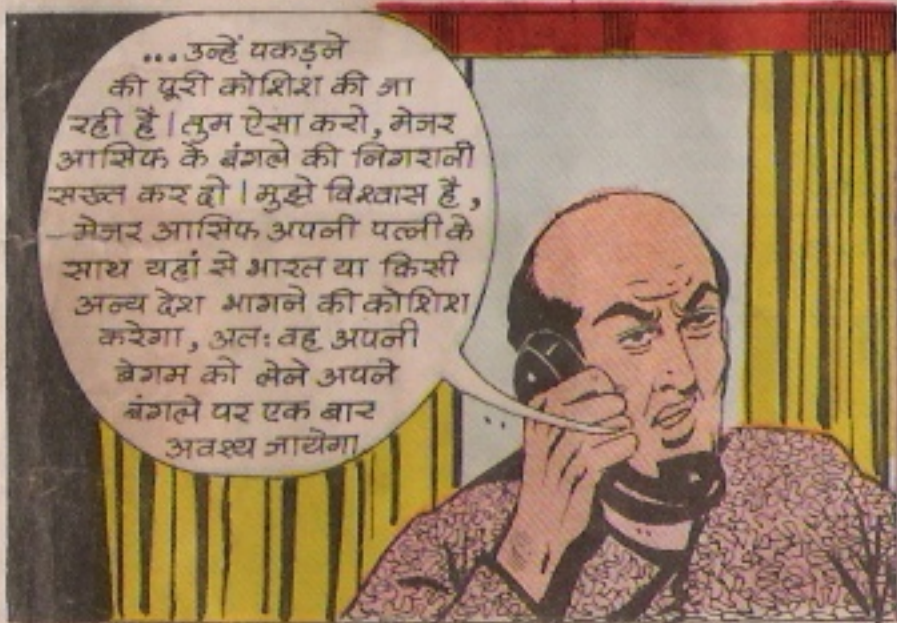
...उन्हें पकड़ने की पूरी कोशिश की जा रही है। तुम ऐसा करो, मेजर आसिफ के बंगले की निगरानी सख्त कर दो। मुझे विश्वास है, मेजर आसिफ अपनी पत्नी के साथ यहां से भारत या किसी अन्य देश भागने की कोशिश करेगा, अतः वह अपनी बेगम को लेने अपने बंगले पर एक बार अवश्य जायेगा

ओह!

लेकिन जनाब, यह भी तो हो सकता है कि वे लोग फोन द्वारा उन्हें कहीं और बुलवा लें।
बच्चों जैसी बातें मत करो। यदि ऐसा भी होता है तो निगरानी करनेवाले क्या अफीम खाकर बंगले के आस-पास सोते रहेंगे।

मैं समझ गया सर! आप निश्चिन्त रहें, मैं स्वयं अब से वहां मौजूद रहूंगा।

और सुनो फन्ने खां, इसी वक्त से गुप्तचरों का पहरा मेजर आसिफ के दामाद के घर पर भी लगवा दो। हो सकता है, वे लोग वहां पनाह लेने की कोशिश करें।

ठीक है सर!

तब ब्रिगेडियर खान ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

और हिचकोले लेती हुई जीप एक स्थान पर स्थिर हो गई।
अब क्या करें? आस-पास छिपने का भी तो स्थान नहीं, जबकि पीछा करने वाले निकट आते जा रहे हैं।
इसके अलावा अब कोई चारा नहीं कि हम उनका मुकाबला करें। अंकल, आप अपनी गन संभाल कर बाईं ओर की झाड़ियों में पोजीशन ले लीजिये, मैं और रहीम दाईं ओर पोजीशन लेते हैं।

मेजर आसिफ तुरन्त अपनी गन लेकर बाईं ओर झाड़ियों की तरफ दौड़ पड़े।

राम और रहीम ने भी झट से दस्ती बमों से भरा बैग उठाया और अपनी-अपनी गन लेकर दाईं ओर पोजीशन लेने दौड़े।
रहीम, तुम्हें डर तो नहीं लग रहा?
बिल्कुल नहीं। मैं सौ बार बुजदिली की जिन्दगी जीने से एक बार बहादुरी की मौत मरना बेहतर समझता हूं।
बहुत खूब!

पलक झपकते ही उन्होंने दायें-बायें पोजीशन ले ली। तब तक पीछा करने वालों का काफिला भी वहां पहुंच चुका था
वे लोग यहीं कहीं आस-पास छुपे हुए हैं। जल्दी से उतरकर उन्हें तलाशो। लेकिन सावधान रहना, उनके पास हथियार भी हैं।

बोलने वाले ने अपनी बात पूरी की ही थी कि राम और रहीम ने दो हथगोले उनकी जीप की ओर उछाल दिये।
धड़ाम्
धड़ाम्

राम-रहीम के पहले ही आक्रमण में कई सैनिक मौत के आगोश में सो गये और बाकियों में जबरदस्त घबराहट फैल गई।
पीछे हटकर सुरक्षित स्थानों पर पोजीशन लो। जल्दी!

सैनिक पूरी शक्ति से इधर-उधर दौड़े, लेकिन तब तक उन्हें काफी देर हो चुकी थी।
धायं-धायं-धायं

धड़ाम!
उफ!
आह!

पलक झपकते ही तमाम सैनिकों की लाशें वहीं बिछ गईं।
हुर्रे! हमारा मार्ग साफ हो गया अंकल!
शाबाश राम बेटे! तुमने तो कमाल ही कर दिया...

...बेटे, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इतने युद्ध-कुशल हो। तुम्हारी योजना वास्तव में शानदार थी...

...मुझे आश्चर्य है कि तुमने इतनी छोटी-सी उम्र में हैण्ड ग्रेनेड फेंकना, ब्रेनगन चलाना और द्वन्द्व-युद्ध के ढेर सारे दांव-पेच कैसे सीख लिये?

यह सब मैंने डैडी से सीखा है अंकल! इन सब आर्ट के अलावा मैं हर प्रकार के वाहन और विमान भी चला सकता हूं।
ओ माई गॉड! क्या सच?
बिल्कुल सच अंकल! वक्त आने पर आपको प्रमाण भी मिल जायेगा।

आइये अंकल, अब देर न करके यहां से निकल चलें। मुझे विश्वास है, सैनिकों की दूसरी जीप सही-सलामत होगी।
खुदा करे ऐसा ही हो, वरना हो सकता है, शीघ्र ही और सैनिक यहां आ धमकें।

ईश्वर की कृपा से उस जीप को कोई क्षति नहीं पहुंची थी, अतः मेजर आसिफ ने ड्राइविंग सीट संभाल ली और राम-रहीम के सीट पर बैठते ही उन्होंने जीप को आगे दौड़ा दिया।
मैं तुम लोगों को ऐसी जगह ले चल रहा हूं, जहां हम कुछ दिनों तक अवश्य सुरक्षित रह सकते हैं।
मैं भी आपसे यही कहने जा रहा था अंकल! आगे की योजना हम वहीं बनायेंगे।

शीघ्र ही मेजर आसिफ ने पक्की सड़क छोड़ जीप को एक उबड़-खाबड़ कच्चे मार्ग पर उतार दिया।
यहां से कुछ ही आगे एक दरिया है, जिसके पास एक गुप्त सुरंग है, और शायद मेरे अलावा उस सुरंग के बारे में कोई दूसरा जानता भी नहीं है। वह सुरंग हमारे रहने के लिये बिल्कुल सुरक्षित रहेगी।
यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन एक परेशानी तो हमें भुगतनी ही पड़ेगी।

खाने-पीने की परेशानी।
वह क्या ?

चिंता मत करो, वहां खाने-पीने का सब इन्तजाम होगा।
क्या मतलब ?

मैं काफी वर्षों पहले ट्रेनिंग के दौरान यहां आ चुका हूं। उसी दौरान घूमते हुए वह सुरंग मेरी नजर में आई थी। निरीक्षण करने पर सुरंग का दूसरा मुहाना जंगल में निकला था...

...और तुम दोनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जंगल में बहुत-से ऐसे पेड़ हैं, जिनमें कई तरह के स्वादिष्ट फल लगते हैं और पानी की कमी वही दरिया पूरी कर देगा।
वो मारा! फिर तो गुजारा आराम से हो जायेगा।

कुछ देर बाद—

लो, दरिया आ गया। तुम दोनों यहीं उतर जाओ। मैं जीप को पास के पेड़ों के झुरमुट में छिपाकर आता हूं।

ठीक है।

राम-रहीम जीप से उतरकर वहीं खड़े हो गये और मेजर आसिफ जीप को लेकर एक तरफ चल पड़े।

मेजर आसिफ को जीप छिपाकर वापस वहां लौटते ज्यादा देर नहीं लगी।

हालांकि रात का समय था, लेकिन चांद की रोशनी में वे बखूबी देख सकते थे। काफी देर तक चलते रहने के पश्चात्–
तुम लोग यहीं ठहरो, मैं सुरंग का मुंह खोलता हूं।

और मेजर आसिफ एक लकड़ी की मदद से उस पहाड़ी सुरंग के मुहाने पर लगे मिट्टी के लौंदे को हटाने लगे।

लगभग बीस मिनट बाद–
वाह!
आ जाओ!

सुरंग के भीतर प्रविष्ट होने के पश्चात् उन्होंने सुरंग के मुंह पर भीतर से घास-फूस के ढेर लगा दिये।
अंकल, यहां तो बड़ा अंधेरा है। हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा।
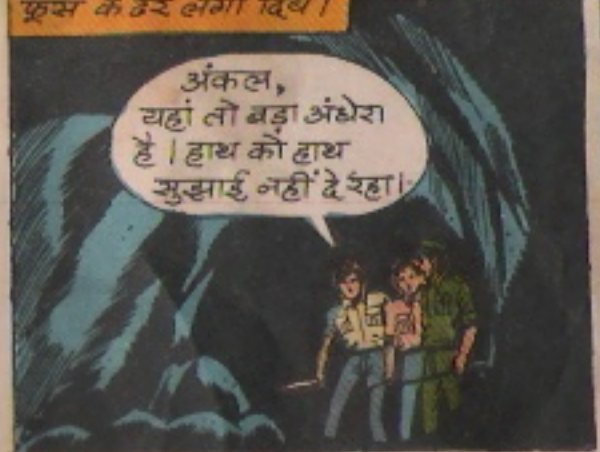
मेरी कमीज का सहारा लेकर मेरे पीछे आओ। इस सुरंग में एक जगह ऐसी है, जहां ऊपर छिद्र हैं। उन छिद्रों से छनकर रोशनी भीतर आती है। हमारे उठने-बैठने के लिये वही स्थान उपयुक्त रहेगा।

राम ने पीछे से मेजर आसिफ की कमीज पकड़ ली और रहीम ने राम की और इस तरह वे धीरे-धीरे उस सुरंग में आगे की ओर बढ़ने लगे।
कुछ देर तक आगे बढ़ते रहने के पश्चात् उन्हें एक स्थान पर ऊपर से चांद की मद्धिम-सी रोशनी छनकर भीतर आती दिखाई दी।
शायद यह वही छिद्र है, जिसकी बाबत आपने हमें बताया था?
हां, यहां हमें रोशनी के साथ-साथ ताजी हवा भी मिलेगी...
ओढ़ने-बिछाने के लिये तो हमारे पास कुछ है नहीं, इसलिये अपनी कमीजें आदि बिछाकर काम चलाओ। सुबह होने पर मैं कुछ प्रबन्ध करूंगा।
ठीक है अंकल!

कुछ ही देर बाद वहां उनके खर्राटे गूंज रहे थे।
खर्र-खर्र-खर्र

सुबह होते ही वे सुरंग पार कर दूसरी ओर मौजूद जंगल में पहुंच गये। वहां नित्य-क्रिया से फारिग होकर उन्होंने पेड़ों से फल तोड़े।

वहीं उन्हें एक पुराना-सा डिब्बा पड़ा मिल गया...

... उसी डिब्बे में पास से बहते दरिया से पानी भरकर ...

... वे पुनः सुरंग में उसी स्थान पर वापस आ गये। फिर उस स्थान की सफाई आदि करके उन्होंने फलाहार किया...

...उसके बाद आगे की योजना बनाने लगे।
अंकल, मेरे दिमाग में तो केवल एक ही बात आती है कि हम जितनी जल्दी हो सके, यह देश छोड़ दें।
चाहता तो मैं भी यही हू राम बेटे, लेकिन यह काम इतना आसान नहीं है। अब तक पूरे शहर के निकासी मार्गों की नाकेबंदी की जा चुकी होगी। एयरपोर्ट व रेल मार्ग पर भी कड़ी निगरानी की जा रही होगी...

...यानी हमारे निकल भागने के तमाम रास्ते बंद किये जा चुके होंगे। ऐसे में इस शहर से निकल भागना तो दूर, हमारे लिये इस सुरंग से भी निकलना खतरनाक सिद्ध होगा।
वह तो ठीक है अंकल, लेकिन यहां हम कितने दिन सर छुपाये बैठे रहेंगे? कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा ना?

राम भइया, हमें एक विषय में और सोचना है। मेरी अम्मी और आपा की जान भी खतरे में है। हो सकता है, हमारे चक्कर में पुलिस और जासूस उन्हें परेशान कर रहे हों, अतः हमें यह देश छोड़ने से पहले उनके लिये भी.
...कुछ ऐसा करके जाना होगा, ताकि वे हर प्रकार की परेशानियों से महफूज रहें। अच्छा होगा कि हम अम्मी, आपा और उनके खाविंद आदि को भी यहां से लेते चलें।

राम के जवाब में रहीम कुछ कहने ही जा रहा था कि—

हां, गाड़ियों के ही इंजन का स्वर है और शायद बहुत-सी गाड़ियां इस सुरंग के पास ही आ रही हैं।
इसका मतलब यह हुआ कि दुश्मनों को हमारे यहां छुपे होने की भनक मिल चुकी है!

निःसन्देह। लेकिन यह एक आश्चर्य की बात है कि उन्हें इस सुरंग के बारे में कैसे पता चल गया...

...खैर, मैं जाकर टोह लेता हूं। यदि वास्तव में हमारे लिये खतरा हुआ तो तुम दोनों भागने के लिये तैयार रहना। हम जंगल की ओर से भागेंगे।

कहकर मेजर आसिफ सुरंग के मुहाने की ओर बढ़ गये, जबकि राम के दिमाग में एक बात बड़ी तेजी से घूम रही थी।
यदि खतरा दोनों तरफ मौजूद हुआ तो...?

मेजर आसिफ ने सुरंग के मुंह से थोड़ा-सा घास-फूस उठाकर बाहर झांका। शीघ्र ही उनकी दृष्टि आकाश में मंडराते दो हैलिकॉप्टरों पर पड़ी।
ओह! तो हैलिकॉप्टरों द्वारा हमारी खोज की जा रही है!
घर्र-घर्र-घर्र
घर्र-घर्र-घर्र

मेजर आसिफ ने निश्चिन्तता की सांस ली और वापस लौट पड़े।
यदि हैलिकॉप्टरों द्वारा हमारी खोजबीन की जा रही है तो यह भी तय है कि आसपास के इलाकों और जंगल में भी पुलिस फोर्स हमारी गंध सूंघती फिर रही होगी। अच्छा हुआ, हम लोग जंगल से जल्दी ही वापस लौट आये।

क्या रहा अंकल! हमारे लिये कोई खतरा तो नहीं?
फिलहाल तो नहीं है, लेकिन हमारी खोज बड़े पैमाने पर की जा रही है, इसलिये फिलहाल हमें इस सुरंग में ही बन्द रहना होगा।
फिर मेजर आसिफ ने उन्हें खोजी हैलिकॉप्टरों के विषय में बता दिया।

सबकुछ सुनकर राम-रहीम का चेहरा गम्भीर हो उठा।
लेकिन यहां हम कब तक बन्द रहेंगे ?
यदि हमें यहीं छुपकर रहना पड़ा तो हम न तो कुछ कर पायेंगे और न ही इस देश से निकल सकेंगे।
फिलहाल तो मजबूरी ही है। हां, रात को कुछ किया जा सकता है।

तो मैंने भी एक निश्चय कर लिया है। मैं आज ही रात आंटी को आपके बंगले से निकाल लाऊंगा। यह काम सिर्फ मैं अकेला ही करूंगा। आप दोनों हमारा यहीं इन्तजार करेंगे।

यह तुम क्या कह रहे हो राम बेटे! यह काम इतना आसान नहीं, जितना तुम समझ रहे हो। फिर मेरे बंगले की निगरानी हो रही होगी, यह भी तुम अच्छी तरह से जानते हो।
यह निर्णय मैंने बहुत ही सोच-समझ कर लिया है अंकल, और इस सम्बन्ध में एक योजना भी तैयार कर चुका हूं।

लेकिन तुम अकेले...।
तुम लोग मेरी चिन्ता न करो रहीम! विश्वास रखो, मुझे कुछ नहीं होगा और मैं आंटी को लेकर सकुशल यहां पहुंच जाऊंगा। उसके बाद हम इस देश से निकल भागने की योजना बनायेंगे।

लेकिन तुम्हारी योजना क्या है? तुम अकेले यह जोखिमभरा काम कैसे करोगे?
मैं अपनी योजना आपको बताता हूं, तब आप समझ जायेंगे। सुनिये...!
फिर राम उन्हें अपनी योजना बताने लगा।

राम की योजना सुनकर—
तुम्हारी योजना तो बहुत अच्छी है राम बेटे, लेकिन यदि तुम पहचान लिये गये तो फिर तुम्हारा वहां से बच निकलना नामुमकिन है।
मैं जानता हूं अंकल, परन्तु बिना इतना रिस्क लिये आंटी को वहां से नहीं निकाला जा सकता। अच्छा अंकल, अब जरा मुझे यहां से अपनी कोठी तक के रास्ते की जानकारी दीजिये, ताकि मेरे काम में परेशानी न आये।
तब मेजर आसिफ उसे विस्तारपूर्वक मार्गों के बारे में बताने लगे।

रात होते ही राम ने वहां मौजूद सामान से ही बूढ़े भिखारी जैसा हुलिया बनाया और फिर मेजर आसिफ और रहीम के साथ उस स्थान पर पहुंचा, जहां मेजर आसिफ ने मिलिट्री की जीप छिपाई थी।
अब आप लौट जाइये अंकल!
ठीक है...

...लेकिन यह रिवाल्वर रख लो, जरूरत पर काम आयेगा खुदा तुम्हारी रक्षा व मदद करे। इसे मैंने मरने वाले एक सैनिक के होलस्टर से निकाल लिया था।
धन्यवाद अंकल! यह वास्तव में मेरे लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

रिवाल्वर को वस्त्रों में छिपाने के बाद राम ने जीप स्टार्ट की और मुख्य सड़क की ओर घुमा दी।
देख रहे हो रहीम! कितना बहादुर है राम। गैर के लिये भी वह अपने प्राणों को खतरे में डालने से पीछे नहीं हट रहा।
मुझे अपने दोस्त और उसकी दोस्ती पर नाज़ है अब्बा आइये, अब वापस चलें।
और वे सुरंग की ओर वापस लौट पड़े।

राम काफी देर तक जीप को विभिन्न मार्गों से दौड़ाता हुआ अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहा। मेजर आसिफ की कोठी की ओर बढ़ता हुआ वह उन्हीं मार्गों का प्रयोग कर रहा था, जो अक्सर रात के समय वीरान हो जाया करते थे।
उन मार्गों की जानकारी मेजर आसिफ ने ही उसे दी थी।

जब वह मेजर आसिफ की कोठी से कुछ ही दूर रह गया तो उसने जीप एक इमारत के सामने रोक दी।
मुझे यहीं उतर जाना चाहिये। यहां से मैं निगरानी करने वालों की टोह लेता हुआ बंगले की ओर बढ़ूंगा।

और —
अल्लाह के नाम पर कुछ दे दे बाबा! अल्लाह के नाम पर...!
बंगले की ओर बढ़ता राम इस बात का बराबर ध्यान रख रहा था कि बंगले की निगरानी कहां-कहां से हो रही है।

अभी तक तो आसपास आठ दस व्यक्ति ही ऐसे नजर आये हैं, जिन पर जासूस होने का संदेह किया जा सकता है...
...लेकिन बंगले के पिछवाड़े सिर्फ एक ही व्यक्ति निगरानी रखे हुए है, अतः मुझे वहीं से बंगले के भीतर प्रविष्ट होने की कोशिश करनी होगी।

लेकिन बंगले का एक और चक्कर लगाने के पश्चात् वह दुबारा जैसे ही बंगले के पिछवाड़े पहुंचा—
अल्लाह के नाम पर...!
ऐ बूढ़े, जहां है वहीं रुक जा।

लगता है, कोई मुसीबत सर पर आ पहुंची है।

शीघ्र ही—
बोल, कौन है तू और इतनी रात गये यहां क्यों चक्कर काट रहा है?
खैरात मांग रहा हूं हुजूर! आज सुबह से मुझे एक फूटी कौड़ी भी भीख में नहीं मिली। अल्लाह के नाम पर तुम्हीं कुछ दे दो न ऐ भले इंसान!

बकवास करता है! इतनी रात गये इस सुनसान स्थान पर तुझे कौन भीख देने आयेगा...
...सच-सच बता, तू कौन है? वरना...।
उस व्यक्ति ने अपनी जेब से कुछ निकालना चाहा...

...लेकिन—
अगर अपनी भलाई चाहते हो तो चुपचाप अपने हाथ ऊपर उठाकर मुंह फेरकर खड़े हो जाओ, वरना मैं तुम्हारी खोपड़ी में कई छेद करने में ज़रा भी नहीं हिचकूंगा।
त... तुम... मैं... मैं...

- क्या राम बंगले में प्रवेश कर रहीम की मां को वहां से ले जा सका?
- मेजर आसिफ और रहीम का क्या हुआ?
- क्या राम दुबारा भारत पहुंच सका?
- रहीम की बहन और उसके जीजा का क्या हुआ?
- राम के पकड़े न जाने पर पाकिस्तानी हुकूमत ने उन पर क्या-क्या जुल्म ढाये?
- आखिर भारत ने ऐसी क्या चीज ईजाद की थी, जिसे पाने के लिये पाकिस्तानी हुकूमत पागल हुई जा रही थी?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये
मनोज कॉमिक्स के आगामी अंक में पढ़ें:-

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्क्स, दिल्ली